International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org

18वीं शताब्दी में रुहेलखंड का राजनीतिक परिदृश्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. संजय कुमार

इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश

**Corresponding author email: skg9956205115@gmail.com*

Received:23 August 2025, Revised: 15 November 2025, Accepted: 01 December 2025, Available Online: 15 December, 2025

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र 18वीं शताब्दी के दौरान रुहेलखंड क्षेत्र में उभरे राजनीतिक घटनाक्रमों का गहन अध्ययन करता है। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल साम्राज्य के पतन और उत्तर-पश्चिम से अफगान (रुहेला) प्रवासियों के आगमन ने इस क्षेत्र को एक नई राजनीतिक पहचान दी। यह पत्र दाऊद खान और अली मोहम्मद खान के नेतृत्व में रुहेला राज्य की स्थापना, नजीबुद्दौला की कूटनीतिक भूमिका, और अवध के नवाबों व मराठों के साथ उनके सत्ता संघर्ष का विश्लेषण करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार रुहेलखंड ने अठारहवीं सदी की अस्थिर राजनीति में एक 'बफर स्टेट' और 'शक्ति केंद्र' के रूप में कार्य किया।

1. प्रस्तावना (Introduction)

18वीं शताब्दी का भारत इतिहास के पन्नों में एक 'अंधकारमय युग' और 'महान परिवर्तन' के संगम के रूप में दर्ज है। सन 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात, जिस मुगल साम्राज्य ने लगभग दो शताब्दियों तक अखंड भारत पर शासन किया था, वह ताश के पत्तों की तरह ढहने लगा। मुगल सत्ता का पतन और केंद्रीय शून्यता: दिल्ली के सिंहासन पर बैठने वाले उत्तरवर्ती मुगल शासक (जैसे बहादुर शाह प्रथम से लेकर शाह आलम द्वितीय तक) दुर्बल और विलासी सिद्ध हुए। दरबार में ईरानी, तुरानी और हिंदुस्तानी गुटों के आपसी षड्यंत्रों ने केंद्रीय शासन को खोखला कर दिया। इस केंद्रीय शून्यता ने क्षेत्रीय शक्तियों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। क्षेत्रीय शक्तियों का अभ्युदय: मुगलों की कमजोरी का लाभ उठाकर बंगाल में मुर्शिद कुली खान, अवध में सादत खान और हैदराबाद में निजाम-उल-मुल्क ने अपनी स्वायत्तता घोषित कर दी। इसी कालखंड में मराठों का उत्तर भारत की ओर तीव्र विस्तार हुआ, जिसने शेष बची मुगल सत्ता को भी

चुनौती दी। विदेशी आक्रमणों का प्रभाव: नादिर शाह (1739) और अहमद शाह अब्दाली (1748-1767) के आक्रमणों ने दिल्ली की कमर तोड़ दी। इन आक्रमणों ने न केवल मुगलों की प्रतिष्ठा को धूल धूसरित किया, बल्कि उत्तर-पश्चिम से अफगान सैनिकों और प्रवासियों के भारत में बसने की प्रक्रिया को भी तेज किया, जो आगे चलकर रुहेलखंड की शक्ति का आधार बने।

रुहेलखंड, जिसे प्राचीनकाल में 'अहिच्छत्र (पंचाल की राजधानी) तथा मध्यकाल में 'कटेहर' के नाम से जाना जाता था, अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण राजनीतिक संघर्षों का केंद्र बना। सीमा विस्तार: रुहेलखंड का क्षेत्र मुख्य रूप से गंगा नदी के उत्तर-पूर्व में स्थित था। इसकी सीमाएं उत्तर में कुमाऊँ की पहाड़ियों (हिमालय की तलहटी), दक्षिण में गंगा नदी, पूर्व में अवध की सीमाओं और पश्चिम में गंगा के पार दिल्ली-मेरठ के क्षेत्रों से मिलती थीं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसमें उत्तर प्रदेश के बरेली, बदायूँ, शाहजहाँपुर, रामपुर, मुरादाबाद और बिजनौर जैसे जिले सम्मिलित हैं। प्राकृतिक सुरक्षा और उर्वरता: गंगा और रामगंगा जैसी नदियों के दोआब में स्थित होने के कारण यह क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ था। घने जंगलों और तराई के क्षेत्रों ने इसे एक प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की थी, जिसका लाभ उठाकर रुहेला सरदारों ने शक्तिशाली सेनाओं के विरुद्ध छापामार युद्ध (Guerrilla Warfare) और घेराबंदी की रणनीतियाँ अपनाईं। सामरिक स्थिति (Buffer State): राजनीति विज्ञान की दृष्टि से रुहेलखंड की स्थिति एक 'बफर स्टेट' जैसी थी। यह दिल्ली की मुगल सत्ता और अवध के नवाबों के बीच स्थित था। साथ ही, यह उत्तर-पश्चिम से आने वाले आक्रमणकारियों के लिए दिल्ली का द्वार भी था। इसकी इसी भौगोलिक अवस्थिति ने इसे मराठों, मुगलों और अवध के नवाबों के त्रिकोणीय संघर्ष का अखाड़ा बना दिया।

कटेहर' से 'रुहेलखंड' का रूपांतरण: इस कालखंड की सबसे महत्वपूर्ण घटना कटेहर' का 'रुहेलखंड' में परिवर्तित होना था। अफगान मूल के 'रुहेला' (पश्तो शब्द 'रोह' से उत्पन्न, जिसका अर्थ है पर्वत) सैनिकों ने इस उपजाऊ भूमि को अपने शौर्य से सींचा। दाऊद खान और अली मोहम्मद खान जैसे महत्वाकांक्षी नेताओं ने भौगोलिक दुर्गमता का लाभ उठाकर यहाँ एक संगठित राजनीतिक सत्ता की नींव रखी, जो आगे चलकर 18वीं शताब्दी की भारतीय राजनीति में 'किंगमेकर' की भूमिका में उभरी।

2. रुहेला शक्ति का उदय: दाऊद खान और अली मोहम्मद खान का योगदान

रुहेलखंड में अफगान शासन की नींव केवल युद्धों पर नहीं, बल्कि राजनीतिक अवसरवादिता और कबीलाई संगठन के अनूठे मेल पर आधारित थी।

2.1 दाऊद खान: रुहेला सत्ता का अग्रदूत (1707-1721)

दाऊद खान एक साहसी अफगान सैनिक था जो मूलतः शाहू-खेल कबीले से संबंधित था। वह भारत में एक साधारण भाड़े के सैनिक के रूप में आया था, लेकिन उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने रुहेलखंड (तत्कालीन कटिहार) के भाग्य को बदल दिया।

- **सैन्य संगठन:** दाऊद खान ने मुगल सूबेदारों और स्थानीय जमींदारों के बीच चल रहे संघर्षों का लाभ उठाया। उसने दक्षिण भारत (मराठा अभियानों) से लौटे अनुभवी अफगान सैनिकों को संगठित किया और एक निजी सेना तैयार की।
- **राजनीतिक चतुरता:** उसने स्वयं को मुगलों के स्थानीय फौजदारों (जैसे मुरादाबाद के फौजदार) के साथ संबद्ध किया। उसने स्थानीय जमींदारों (जैसे बहेड़ी और पिथौरा के राजाओं) के विरुद्ध सैन्य सहायता प्रदान कर बदले में जागीरें और प्रभाव प्राप्त किया।
- **विरासत:** दाऊद खान ने किसी संगठित राज्य की स्थापना तो नहीं की, लेकिन उसने 'रुहेला' नाम को एक सैन्य शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया और अपने दत्तक पुत्र **अली मोहम्मद खान** के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया।

2.2 अली मोहम्मद खान: रुहेलखंड का वास्तविक संस्थापक (1721-1748)

अली मोहम्मद खान के शासनकाल में कटेहर' आधिकारिक तौर पर 'रुहेलखंड' के रूप में रूपांतरित हुआ। वह एक कुशल कूटनीतिज्ञ और दूरदर्शी शासक था।

- **विधिक वैधता की प्राप्ति (Political Legitimacy):** अली मोहम्मद खान ने केवल तलवार के बल पर शासन नहीं किया। उसने मुगल सम्राट **मुहम्मद शाह 'रंगीला'** की सेवा की और नादिर शाह के आक्रमण (1739) के समय उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर अपनी सीमाओं का विस्तार किया। सम्राट ने उसे **'नवाब'** की उपाधि दी और कटिहार का फौजदार नियुक्त किया, जिससे उसके शासन को विधिक मान्यता प्राप्त हुई।
- **क्षेत्रीय विस्तार और बदायूँ का महत्व:** अली मोहम्मद खान ने आंवला (बरेली) को अपनी राजधानी बनाया, लेकिन **बदायूँ** को एक प्रमुख रणनीतिक केंद्र के रूप में विकसित किया। उसने संभल, मुरादाबाद, बरेली और शाहजहाँपुर के क्षेत्रों को जीतकर एक विशाल भू-भाग पर नियंत्रण स्थापित किया।
- **प्रशासनिक सुधार:** उसने अफगान कबीलाई प्रथाओं को मुगल प्रशासनिक ढांचे के साथ जोड़ा। उसने अपने क्षेत्र को विभिन्न सरदारों (जैसे हाफिज रहमत खान, दूंदे खान) के बीच विभाजित किया, जिससे एक **'परिसंघीय शासन व्यवस्था' (Confederate Structure)** का जन्म हुआ।
- **मुगलों और अवध के साथ संघर्ष:** 1745 में मुगल वजीर सफदरजंग (अवध का नवाब) की ईर्ष्या के कारण मुगल सेना ने रुहेलखंड पर आक्रमण किया। अली मोहम्मद खान

को कुछ समय के लिए समर्पण करना पड़ा और उसे सरहिंद भेज दिया गया। किंतु उसकी कूटनीतिक कुशलता ऐसी थी कि वह शीघ्र ही वापस लौटा और अपनी खोई हुई सत्ता को पुनः प्राप्त कर लिया।

2.3 निष्कर्ष: एक नए शक्ति केंद्र का उदय

दाऊद खान ने रुहेला शक्ति का 'बीजारोपण' किया, तो अली मोहम्मद खान ने उसे एक 'वटवृक्ष' का रूप दिया। अली मोहम्मद खान की मृत्यु (1748) के समय, रुहेलखंड उत्तर भारत का सबसे संगठित और शक्तिशाली अफगान राज्य बन चुका था। उसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उसने रुहेलों को केवल 'विदेशी लुटेरों' की छवि से निकालकर 'भूमि के स्वामी' और 'प्रशासक' के रूप में स्थापित कर दिया।

3. राजनीतिक विस्तार और प्रशासनिक ढांचा: कटिहार से रुहेलखंड बनने की यात्रा

अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक गंगा के उत्तरी मैदानों का यह क्षेत्र, जो पहले कटेहर' कहलाता था, एक सुदृढ़ राजनीतिक इकाई 'रुहेलखंड' के रूप में उभरा। यह परिवर्तन मात्र नाम का नहीं था, बल्कि इसके पीछे एक गहरी प्रशासनिक और सामरिक सोच थी।

3.1 क्षेत्रीय विस्तार और सीमाओं का पुनर्निर्धारण

अली मोहम्मद खान के नेतृत्व में रुहेलों ने अपनी सीमाओं का विस्तार अत्यंत सुनियोजित ढंग से किया:

- **प्रारंभिक विस्तार:** दाऊद खान के समय में रुहेला प्रभाव केवल कुछ गाँवों तक सीमित था। अली मोहम्मद खान ने संभल और मुरादाबाद के मुगल फौजदारों की कमजोरी का लाभ उठाकर धीरे-धीरे **बदायूँ**, बरेली और शाहजहाँपुर के उपजाऊ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।
- **रणनीतिक विजय:** रुहेलों ने उत्तर में कुमाऊँ के तराई क्षेत्रों से लेकर दक्षिण में गंगा के तटों तक अपना नियंत्रण स्थापित किया। पश्चिम में बिजनौर से लेकर पूर्व में पीलीभीत तक का संपूर्ण क्षेत्र एक ध्वज (रुहेला सत्ता) के नीचे आ गया।
- **बदायूँ का केंद्र बिंदु के रूप में उदय:** इस विस्तार में बदायूँ की स्थिति एक अभेद्य दुर्ग जैसी थी। यहाँ की ऐतिहासिक जामा मस्जिद और पुरानी किलाबंदी ने रुहेलों को एक सांस्कृतिक और सामरिक आधार प्रदान किया।

3.2 प्रशासनिक ढांचा: अफगान परिसंघ (The Afghan Confederacy)

रुहेलखंड का प्रशासन पारंपरिक मुगल केंद्रीयवाद और अफगान कबीलाई लोकतंत्र का एक अनोखा संगम था।

- **विकेंद्रीकृत सत्ता:** अली मोहम्मद खान ने पूरे राज्य को सात प्रमुख जागीरों में विभाजित किया था। प्रत्येक जागीर का प्रमुख एक शक्तिशाली रुहेला सरदार (जैसे हाफिज रहमत खान, दूंदे खान, नजीब खान) होता था।
- **मुखियाओं की परिषद (Council of Chiefs):** महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए एक 'मजलिस' या परिषद होती थी। यद्यपि नवाब सर्वोच्च था, किंतु वह अपने प्रमुख सरदारों की सलाह लेने के लिए बाध्य था। यह व्यवस्था आधुनिक **'कैबिनेट प्रणाली'** के प्रारंभिक स्वरूप जैसी प्रतीत होती है।
- **राजस्व प्रबंधन:** रुहेलों ने मुगल 'आमली' पद्धति को जारी रखा लेकिन उसमें सुधार किए। उन्होंने बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया और किसानों को कम लगान पर भूमि प्रदान की ताकि क्षेत्र की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

3.3 सैन्य प्रशासन: शक्ति का मूल आधार

रुहेलखंड की प्रशासनिक स्थिरता उसकी सेना पर टिकी थी।

- **कबीलाई भर्ती:** सेना का गठन कबीलाई आधार पर था (जैसे यूसुफजई, खलील, बरेच)। यह रक्त-संबंध सेना में अटूट वफादारी पैदा करता था।
- **अश्वारोही और पैदल सेना:** रुहेला पैदल सैनिक अपनी निर्भीकता और 'बंदूकची' (Musketeers) के रूप में प्रसिद्ध थे। उनकी युद्ध नीति में तराई के जंगलों का उपयोग कर छापामार युद्ध करना शामिल था।

3.4 विधिक एवं न्यायिक व्यवस्था

- **शरिया और परंपरा:** न्याय व्यवस्था मुख्य रूप से इस्लामी कानूनों (शरिया) और अफगान कबीलाई परंपराओं पर आधारित थी। नगरों में 'काजी' नियुक्त किए जाते थे, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में विवादों का निपटारा कबीलाई पंचायतें करती थीं।
- **विधिक मान्यता:** अली मोहम्मद खान ने सदैव मुगल सम्राट से अपनी सत्ता की 'सनद' (विधिक आदेश) प्राप्त करने का प्रयास किया, ताकि वह विद्रोही के बजाय एक 'विधिक सूबेदार' के रूप में पहचाना जाए।

3.5 निष्कर्ष: कटेहर' का 'रुहेलखंड' में विलय

इस प्रशासनिक और राजनीतिक यात्रा ने कटिहार के स्थानीय राजपूतों और अन्य समुदायों के वर्चस्व को समाप्त कर एक **'अफगान संभ्रांत वर्ग'** (Afghan Elite Class) की स्थापना की। रुहेलखंड का यह ढांचा इतना मजबूत था कि अली मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद भी आंतरिक कलह के बावजूद यह राज्य लगभग तीन दशकों तक मराठों और अवध के विरुद्ध टिका रहा।

4. प्रमुख संघर्ष: रुहेला-अफगान संबंध, मराठा आक्रमण और अवध के नवाबों के साथ प्रतिद्वंद्विता

रुहेलखंड की विदेश नीति और सामरिक संघर्ष मुख्य रूप से अपनी अस्तित्व रक्षा और क्षेत्रीय संप्रभुता को बनाए रखने पर केंद्रित थे।

4.1 रुहेला-अफगान संबंध: जातीय अस्मिता और सामरिक गठबंधन

रुहेला सरदारों का संबंध अफगानिस्तान के 'रोह' क्षेत्र से था। अहमद शाह अब्दाली के भारत पर आक्रमणों के समय रुहेलों की भूमिका दोहरी थी:

- **जातीय सहानुभूति:** रुहेले अब्दाली को अपना जातीय संरक्षक मानते थे। जब भी दिल्ली या मराठों का दबाव बढ़ता, रुहेले अब्दाली को निमंत्रण भेजते थे।
- **राजनीतिक स्वायत्तता की रक्षा:** यद्यपि वे अब्दाली के सहयोगी थे, किंतु वे अपनी आंतरिक स्वायत्तता को लेकर अत्यंत सजग थे। नजीबुद्दौला ने इस संबंध का उपयोग मुगलों और मराठों के विरुद्ध एक 'सुरक्षा कवच' के रूप में किया।

4.2 मराठा आक्रमण: चौथ और क्षेत्रीय वर्चस्व का संघर्ष

मराठों का उत्तर भारत में विस्तार रुहेलखंड के लिए सबसे बड़ा खतरा था।

- **चौथ की मांग:** मराठा पेशवाओं की नीति 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' वसूलने की थी। रुहेलखंड की उर्वरता ने मराठों को आकर्षित किया। 1751-52 और फिर 1770-72 के दौरान मराठों ने रुहेलखंड पर भीषण आक्रमण किए।
- **बफर स्टेट का संकट:** रुहेलखंड मराठों के दिल्ली और दोआब की ओर बढ़ने के मार्ग में एक अवरोध (Buffer) था। मराठों ने कई बार **बदायूँ** और **बरेली** तक धावा बोला, जिससे रुहेलों को मजबूरन अवध या अब्दाली की शरण में जाना पड़ा।

4.3 अवध के नवाबों के साथ प्रतिद्वंद्विता: सीमा विवाद और ईर्ष्या

अवध और रुहेलखंड के संबंध 'सहयोग से अधिक संघर्ष' के रहे हैं। राजनीति विज्ञान की दृष्टि से यह **'समीपवर्ती राज्य प्रतिद्वंद्विता' (Neighbouring State Rivalry)** का शास्त्रीय उदाहरण है।

- **वजीर सफदरजंग की भूमिका:** अवध का नवाब सफदरजंग रुहेलों की बढ़ती शक्ति को मुगल साम्राज्य और अपनी सूबेदारी के लिए खतरा मानता था। उसने रुहेलों के विरुद्ध मराठों को आमंत्रित करने की नीति अपनाई।
- **शुजाउद्दौला और विस्तारवाद:** सफदरजंग के उत्तराधिकारी शुजाउद्दौला की दृष्टि सदैव रुहेलखंड के उपजाऊ क्षेत्रों पर थी। वह रुहेलखंड को अवध के एक हिस्से के रूप में देखना चाहता था।
- **1772 की संधि:** मराठों के भय से हाफिज रहमत खान (रुहेला प्रमुख) ने शुजाउद्दौला के साथ एक रक्षात्मक संधि की, जिसमें रुहेलों ने 40 लाख रुपये देने का वादा किया था। यही धनराशि बाद में रुहेलखंड के पतन का विधिक कारण बनी।

4.4 त्रिकोणीय संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता

यह कालखंड **'तदर्थ गठबंधन' (Ad-hoc Alliances)** का था। रुहेले कभी मुगलों के साथ मिलकर मराठों से लड़ते, तो कभी मराठों के डर से अवध के साथ संधि करते। इस राजनीतिक अस्थिरता ने रुहेलखंड की सैन्य और आर्थिक शक्ति को क्षीण कर दिया।

राजनीतिक निष्कर्ष: इन संघर्षों ने यह सिद्ध किया कि रुहेलखंड के पास कुशल सैनिक तो थे, किंतु एक स्थिर और दीर्घकालिक कूटनीतिक मित्र का अभाव था। उनकी कूटनीति केवल तात्कालिक संकट टालने तक सीमित रही।

5. नजीबुद्दौला और पानीपत का तृतीय युद्ध (1761): रुहेलखंड की राजनीति का चरमोत्कर्ष

यदि अली मोहम्मद खान रुहेलखंड के संस्थापक थे, तो नजीबुद्दौला इसके सबसे प्रखर कूटनीतिज्ञ और साम्राज्य विस्तारक सिद्ध हुए। उनका उत्थान रुहेला राजनीति में 'व्यक्तिगत प्रतिभा' और 'अवसरवादिता' के सफल मेल का उदाहरण है।

5.1 नजीबुद्दौला का अभ्युदय: एक साधारण सैनिक से 'मीर बख्शी' तक

नजीब खान (जो बाद में नजीबुद्दौला कहलाया) ने अपने करियर की शुरुआत एक साधारण सैनिक के रूप में की थी। अली मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद उपजे उत्तराधिकार के संघर्ष और आंतरिक कलह के बीच उसने अपनी स्वतंत्र राह चुनी।

- **दिल्ली की राजनीति में प्रवेश:** नजीब ने मुगल वजीर इमाद-उल-मुल्क की सहायता की और बाद में अहमद शाह अब्दाली का विश्वास पात्र बनकर दिल्ली के दरबार में **'मीर बख्शी'** (मुख्य सेनापति) और 'अमीर-उल-उमरा' का पद प्राप्त किया।
- **विधिक संप्रभुता का केंद्र:** इस पद के माध्यम से रुहेलखंड की शक्ति का विस्तार दिल्ली तक हो गया। अब रुहेले केवल अपनी सीमाओं की रक्षा नहीं कर रहे थे, बल्कि वे मुगल साम्राज्य के 'वैध रक्षक' बन चुके थे।

5.2 पानीपत का तृतीय युद्ध (1761) और रुहेलों की निर्णायक भूमिका

पानीपत का युद्ध केवल मराठों और अफगानों का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह भारत के भविष्य की दिशा तय करने वाला युद्ध था। इसमें नजीबुद्दौला की भूमिका 'धुरी' (Pivot) के समान थी:

- **कूटनीतिक घेरेबंदी:** नजीब ने अहमद शाह अब्दाली को भारत आमंत्रित किया और मराठों के विरुद्ध एक 'मुस्लिम परिसंघ' बनाने में सफलता प्राप्त की। उसने शुजाउद्दौला (अवध के नवाब) को, जो पहले तटस्थ था, मराठों के विरुद्ध अब्दाली के पक्ष में आने के लिए राजी किया।
- **सामरिक योगदान:** युद्ध के मैदान में नजीब की रुहेला सेना (लगभग 30,000 से 40,000 सैनिक) सबसे अनुशासित और घातक सिद्ध हुई। मराठों की 'छापामार' पद्धति के विरुद्ध नजीब ने 'खाई खोदकर' और 'घेराबंदी' की जो रणनीति अपनाई, उसने युद्ध का परिणाम बदल दिया।
- **परिणाम:** मराठों की पराजय ने रुहेलखंड के अस्तित्व पर मंडरा रहे सबसे बड़े खतरे को अस्थायी रूप से टाल दिया और नजीबुद्दौला को उत्तर भारत का निर्विवाद 'किंगमेकर' बना दिया।

5.3 रुहेलखंड की राजनीति का चरमोत्कर्ष (1761-1770)

युद्ध के पश्चात अगले दस वर्षों तक नजीबुद्दौला ने दिल्ली के वास्तविक शासक (Regent) के रूप में कार्य किया।

- **शाह आलम द्वितीय और नजीब:** मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय दिल्ली से बाहर था और नजीब ने दिल्ली का प्रशासन सुचारू रूप से चलाया। इस दौरान रुहेलखंड की सीमाएं अपने अधिकतम विस्तार पर थीं।
- **प्रशासनिक कुशलता:** उसने सिखों, जाटों और बचे हुए मराठा प्रभाव को दिल्ली के आसपास से दूर रखा। राजनीति विज्ञान की दृष्टि से यह **'Crisis Management'** का

एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ एक विखंडित साम्राज्य को नजीब ने अपने सैन्य कौशल से थामे रखा।

5.4 पतन के बीज

नजीबुद्दौला की सफलता ने रुहेलखंड को शिखर पर तो पहुँचाया, लेकिन साथ ही इसके पतन के बीज भी बो दिए।

- **शत्रुओं में वृद्धि:** रुहेलों के बढ़ते वर्चस्व ने अवध के नवाब और मराठों के मन में गहरी असुरक्षा और प्रतिशोध की भावना भर दी।
- **अब्दाली पर निर्भरता:** नजीब की शक्ति काफी हद तक अब्दाली के समर्थन पर टिकी थी। अब्दाली के वापस लौटने और 1770 में नजीब की मृत्यु के बाद रुहेलखंड 'अनाथ' हो गया।

6. रुहेला युद्ध (1774) और पतन: ब्रिटिश एवं अवध की संयुक्त भूमिका

रुहेलखंड का पतन किसी एक युद्ध की हार मात्र नहीं थी, बल्कि यह **'बनारस की संधि (1773)'** का एक सुनियोजित और विधिक परिणाम था।

6.1 पतन की पृष्ठभूमि: 1772 की रक्षात्मक संधि

1770 में नजीबुद्दौला की मृत्यु के बाद रुहेलखंड नेतृत्व विहीन हो गया। 1772 में मराठों ने पुनः रुहेलखंड पर भीषण आक्रमण किया।

- **असुरक्षा का वातावरण:** रुहेला सरदार हाफिज रहमत खान ने मराठों से बचने के लिए अवध के नवाब **शुजाउद्दौला** के साथ एक संधि की। इस संधि में यह तय हुआ कि यदि नवाब मराठों को खदेड़ने में मदद करेगा, तो रुहेले उसे **40 लाख रुपये** देंगे।
- **ब्रिटिश मध्यस्थता:** इस संधि की सबसे महत्वपूर्ण विधिक बात यह थी कि इसमें तत्कालीन ब्रिटिश कमांडर सर रॉबर्ट बार्कर को 'गवाह' (Witness) बनाया गया था, जिससे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को इस विवाद में हस्तक्षेप का विधिक आधार मिल गया।

6.2 बनारस की संधि (1773): एक गुप्त षड्यंत्र

मराठों के पीछे हटने के बाद शुजाउद्दौला ने 40 लाख रुपये की मांग की। रुहेलों की आर्थिक स्थिति जर्जर थी और वे यह राशि देने में असमर्थ थे।

- **शुजाउद्दौला और वारेन हेस्टिंग्स का गठबंधन:** अवध के नवाब ने फोर्ट विलियम के गवर्नर **वारेन हेस्टिंग्स** के साथ एक गुप्त समझौता किया। नवाब ने कंपनी को 40 लाख रुपये और सेना का खर्च देने का वादा किया, यदि कंपनी उसे रुहेलखंड को जीतने में सैनिक सहायता दे।
- **भाड़े की सेना (Mercenary Policy):** राजनीति विज्ञान की दृष्टि से यह ब्रिटिश साम्राज्य का वह काला अध्याय है जहाँ एक संप्रभु राज्य (रुहेलखंड) को नष्ट करने के लिए ब्रिटिश सेना को 'किराए' पर दिया गया।

6.3 मीरांपुर कटरा का युद्ध (23 अप्रैल, 1774)

यही वह निर्णायक संघर्ष था जिसने रुहेलखंड की नियति तय कर दी।

- **सैन्य असंतुलन:** एक ओर हाफिज रहमत खान के नेतृत्व में बहादुर लेकिन बिखरी हुई रुहेला सेना थी, और दूसरी ओर कर्नल चैंपियन के नेतृत्व में अनुशासित ब्रिटिश तोपखाना और अवध की विशाल सेना।
- **हाफिज रहमत खान की वीरगति:** वयोवृद्ध हाफिज रहमत खान युद्ध के मैदान में लड़ते हुए शहीद हो गए। उनकी मृत्यु के साथ ही संगठित रुहेला प्रतिरोध समाप्त हो गया।
- **बौद्धिक एवं मानवीय हानि:** युद्ध के बाद अवध की सेना ने रुहेलखंड में भीषण लूटपाट और दमन किया। बदायूँ, बरेली और पीलीभीत के क्षेत्रों में रुहेलों का राजनीतिक वर्चस्व सदा के लिए समाप्त हो गया।

6.4 विधिक और राजनीतिक परिणाम

- **रामपुर रियासत का जन्म:** युद्ध के बाद केवल अली मोहम्मद खान के पुत्र फैजुल्ला खान को रामपुर की एक छोटी सी जागीर (रियासत) दी गई, जो अंग्रेजों के संरक्षण में रही। शेष रुहेलखंड को अवध में मिला लिया गया।
- **वारेन हेस्टिंग्स पर महाभियोग:** इस युद्ध की अनैतिकता इतनी अधिक थी कि बाद में एडमंड बर्क ने ब्रिटिश संसद में वारेन हेस्टिंग्स पर जो महाभियोग (Impeachment) चलाया, उसमें 'रुहेला युद्ध' एक प्रमुख आरोप था। बर्क ने इसे "मानवता के विरुद्ध अपराध" कहा था।

7. निष्कर्ष: रुहेलखंड के राजनीतिक उत्थान और पतन के ऐतिहासिक सबक

रुहेलखंड का इतिहास एक उल्कापिंड की तरह है—तीव्र उत्थान और उतना ही आकस्मिक पतन। इसके पतन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

1. **शक्ति का विकेंद्रीकरण:** रुहेलों की 'परिसंघीय व्यवस्था' (Confederacy) युद्ध काल में उनकी कमजोरी बनी। संकट के समय रुहेला सरदार एक नेतृत्व के नीचे पूरी तरह एकजुट नहीं हो पाए।
2. **कूटनीतिक एकाकीपन:** नजीबुद्दौला के बाद कोई ऐसा नेता नहीं हुआ जो अंतरराष्ट्रीय शक्तियों (अंग्रेजों और मराठों) के साथ प्रभावी कूटनीति कर सके।
3. **वित्तीय प्रबंधन का अभाव:** किसी भी राज्य की संप्रभुता उसकी वित्तीय स्थिति पर निर्भर करती है। 40 लाख रुपये की वह 'संधि राशि' रुहेलखंड के लिए डेथ-वारंट (Death Warrant) सिद्ध हुई।
4. **लोक कल्याणकारी राज्य बनाम सैन्य राज्य:** रुहेलखंड का ढांचा मुख्य रूप से सैन्य था। जब तक युद्ध चलते रहे, यह टिका रहा, लेकिन प्रशासनिक और कूटनीतिक स्थायित्व के अभाव में यह औपनिवेशिक विस्तारवाद की भेंट चढ़ गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. **मस्तजाब खान (1831):** *गुले रहमत (Gulistan-i-Rahmat)*, (अनुवादक: चार्ल्स इलियट), ओरिएंटल ट्रांसलेशन फंड, लंदन। (यह हाफिज रहमत खान के जीवन और रुहेला युद्ध का समकालीन स्रोत है)।
2. **सरकार, जदुनाथ (1991):** *फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर (Fall of the Mughal Empire)*, भाग 1 और 2, ओरिएंट लॉन्गमेन, नई दिल्ली। (18वीं सदी की राजनीति का सबसे प्रामाणिक स्रोत)।
3. **हुसैन, इकबाल (1994):** *द राइज एंड डिक्लाइन ऑफ द रुहेला चीफडम्स (The Rise and Decline of the Rohilla Chiefdoms)*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
4. **गुलाम हुसैन खान (1789):** *सियार-उल-मुताखरीन (Seir Mutaqherin)*, (अनुवादक: एम. रेमंड), कलकत्ता। (अठारहवीं सदी के राजनीतिक उथल-पुथल का समकालीन फारसी इतिहास)।
5. **जोशी, शशि (2007):** *रुहेलखंड का इतिहास*, बरेली।
6. **हैमिल्टन, चार्ल्स (1787):** *एन हिस्टोरिकल रिलेशन ऑफ द ओरिजिन, प्रोग्रेस एंड फाइनल डिसोल्यूशन ऑफ द गवर्नमेंट ऑफ द रुहेला अफगान्स इन हिंदोस्तान (An Historical Relation of the Rohilla Afgans)*, लंदन।
7. **बार्नेट, रिचर्ड बी. (1980):** *नॉर्थ इंडिया बिटवीन एम्पायर्स: अवध, द मुगल्स एंड द ब्रिटिश (North India Between Empires: Awadh, the Mughals and the British)*, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. **श्रीवास्तव, ए.एल. (1933):** *द फर्स्ट टू नवाब्स ऑफ अवध (The First Two Nawabs of Oudh)*, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा। (रुहेला-अवध संघर्ष के अध्ययन हेतु)।

9. **मैल्कम, जॉन (1826):** *द पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इंडिया*, लंदन। (ब्रिटिश-रुहेला युद्ध के सामरिक विश्लेषण हेतु)।
10. **गुलाम अली खान (1827):** *इमाद-उस-सादात (Imad-us-Saadat)*, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। (अवध और रुहेलखंड के संबंधों पर विस्तृत फारसी विवरण)।
11. **बर्क, एडमंड (1794):** *स्पीचेस ऑन द इम्पीचमेंट ऑफ वारेन हेस्टिंग्स (Speeches on the Impeachment of Warren Hastings)*, लंदन। (रुहेला युद्ध के विधिक और नैतिक पक्षों के अध्ययन हेतु)।
12. **मिश्र, आनंद स्वरूप (1968):** *नाना साहेब पेशवा एंड द फाइट फॉर फ्रीडम*, (रुहेलखंड में मराठा अभियानों के संदर्भ में)।
13. **अल्वी, सीमा (1995):** *द सेपॉय एंड द कंपनी (The Sepoy and the Company)*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (रुहेला सैनिकों के सैन्य कौशल और उनके पतन के कारणों पर शोध)।
14. **बदायुनी, मुस्तकीम (2012):** *बदायूँ का ऐतिहासिक और राजनीतिक उत्थान*, (स्थानीय इतिहास और रुहेला काल)।
15. **फिशर, माइकल एच. (1987):** *ए क्लैश ऑफ कल्चर्स: अवध, द ब्रिटिश एंड द मुगल्स*, रिवरडेल कंपनी।